(३ घंटे) (पूर्णांक : १००)

सूचना : १. **सभी** प्रश्न **अनिवार्य** हैं ।
२. **सभी** प्रश्नों के लिए **समान अंक** हैं ।

१. 'काव्य नाटक' विधा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसके भेदों का परिचय दीजिए । (२०)

अथवा

'रेखाचित्र' की परिभाषा देकर उसके स्वरूप का विस्तार से विवेचन कीजिए ।

२. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । (२०)

क) ''हूँगा मैं देवता
भगवान
अंतर्यामी
सब कुछ ।''

अथवा

''वर्तमान में हारे इस विश्वास का
भविष्य तो छोड़ दिया होता?
छोड़ दिया होता भविष्य तो
दाँव पर लगाने से?''

ख) ''मैंने कहा-खाओ न? क्या तुम्हारे घर में ये सब नहीं बनते? छठ का व्रत नहीं होता? कितने प्रश्न - किंतु सबका जवाब 'न' में ही और वह भी मुँह से नहीं, जरा-सा गर्दन हिलाकर ।''

अथवा

''उनके निधन से तीन महीने पहले उनसे मिलने गया था'', तब यह दोहराने के बाद कि ''हम तो अब पका फल है'', थोड़ी देर एक दार्शनिक भाव में डूबे रहने के बाद उन्होंने कहा, ''अज्ञेय जी, हमारी, आपसे एक प्रार्थना है, बस उसे पूरा कर दीजिए...''

३. 'खंड-खंड अग्नि' काव्य नाटक में चित्रित चरित्र-चित्रण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (२०)

अथवा

'खंड-खंड अग्नि' काव्य नाटक के शीर्षक की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए ।

४. 'भक्तिन' के व्यक्तित्व की विशेषताओं का सोदाहरण परिचय दीजिए । (२०)

अथवा

'ये हैं प्रोफेसर शशांक' पाठ के रचयिता का नाम बताकर पठित पाठ में वर्णित चरित्र का चित्रण कीजिए ।

५. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए । (२०)

क) 'खंड-खंड अग्नि' काव्य नाटक के सूत्र के विषय में लेखक दिविक रमेश के विचार ।
ख) 'अग्नि' का चरित्र-चित्रण ।
ग) 'कमला' का जीवन-संघर्ष ।
घ) 'हृषिकेश मुखर्जी के साथ ढाई दिन' शीर्षक की सार्थकता ।

77F960F05B8A1CC9F33202955F4D633F